अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण अप्रैल 2013

अनुवादक : डॉर्थी शरदकान्त थॉमस
प्रूफ रीड़िंग : शरदकान्त थॉमस
मुखपृष्ठ एवं ग्राफिक डिज़ाईन : सुजित जॉन एब्राहाम

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - The Wonderful Benefits of Praying in Tongues)

विषयसूचि

1.	**अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना—एक परिचय**	**1**
प्रश्न 1.	अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना क्या है?	4
प्रश्न 2.	कई प्रकार की भाषाएं क्या हैं?	11
प्रश्न 3.	क्या हर एक विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकता है?	17
प्रश्न 4.	1 कुरिन्थियों 12:28–30 के विषय में क्या?	22
प्रश्न 5.	क्या अन्य अन्य भाषाओं का अर्थ हमेशा समझना चाहिए या उसका अनुवाद किया जाना चाहिए?	23
प्रश्न 6.	क्या जब मैं चाहता हूं, तब अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकता हूं?	24
प्रश्न 7.	क्या मुझे अन्य अन्य भाषाएं बोलने के लिए चीखने, चिल्लाने, कांपने या अजीब बर्ताव करने की ज़रूरत है?	26
प्रश्न 8.	क्या जब सब इकट्ठा होते हैं, तब मैं कलीसिया में अन्य अन्य भाषाओं में बोल सकता हूं?	27
प्रश्न 9.	यदि मैं अन्य अन्य भाषाओं में बहुत अधिक प्रार्थना करता हूं, तो क्या यह उचित है?	28
प्रश्न 10.	क्या मैं अन्य अन्य भाषाओं में बोलता हूं या पवित्र आत्मा मेरे द्वारा बोलता है?	28
2.	**सेवकों के आचार नियम**	**30**
	बिना सीमाओं के प्रार्थना करना	30
	परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार प्रार्थना करना	30
	देह की निर्बलताओं पर जय पाने में हमारी सहायता करता है	31
	आत्मिक उन्नति करता है	32
	हमें परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखता है	32
	विश्राम और ताज़गी लाता है	33
	परमेश्वर की स्तुति और बड़ाई करने का दूसरा तरीका	33
	हमारी आत्माओं को हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के भेदों (छिपी हुई गुप्त बातों) को प्राप्त करने की सामर्थ देता हैं	34
	परमेश्वर के उन वरदानों को चमकाने में मदद करता है, जो हममें हैं	36
3.	**अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने की योग्यता के साथ पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने हेतु प्रार्थना**	**37**

1

अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना—एक परिचय

एक जवान लड़के के रूप में, मैं कोयम्बटूर के ऑल सेन्ट्स चर्च में, जो कि चर्च ऑफ साउथ इंडिया का एक भाग है, सण्डेस्कूल जाया करता था और बाद में अपने परिवार के साथ बैंगलोर के रिचमंड टाऊन मेथडिस्ट चर्च जाने लगा। मैंने कभी नए नियम में देखे जाने वाले पवित्र आत्मा के संचार एवं कार्य और उसके वरदानों के विषय में वास्तविक रूप से कभी नहीं जाना था। ऑल सेन्ट्स चर्च और मेथडिस्ट चर्च में गर्मी के दिनों में आयोजित किए जाने वाले अवकाशकालीन बाइबल स्कूलों में मैं सचमुच बड़ा आनंद मनाता था और इन कलीसियाओं के द्वारा मेरे जीवन में जो कुछ बोया गया है, उसके लिए मैं अत्यंत ध न्यवादी हूं। परंतु, बिशप कॉटन बॉयज् स्कूल, बैंगलोर में जब मैं आठवी कक्षा में था, मेरे तेहरवें जन्मदिन से पहले पाठशाला के मेरे एक शिक्षक, मिस्टर एन्ड्र्यू टायलर ने प्रभु यीशु की ओर मेरी अगुवाई की। उस दोपहर, सेंट पीटर चैपल की वेस्ट्री में बैठे हुए जब उन्होंने यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करने हेतु सरल प्रार्थना में मेरी अगुवाई की, तब कुछ भी अनोखा घटित नहीं हुआ। परंतु फिर भी, किसी भी प्रकार की भावना के न होते हुए, बिना किसी एहसास के, मेरे अन्दर कुछ गहरा, कुछ निश्चित और सामर्थपूर्ण कार्य हुआ। मैंने नया जन्म पाया! और इसके साथ ही, मैं नहीं जानता कि कहां से, परंतु अचानक यीशु मसीह से प्रेम करने और उसकी खोज करने की एक ऐसी इच्छा मेरे मन में उत्पन्न हुई जिसे समझाया नहीं जा सकता। मैं हर दोपहर भोजन के अवकाश में प्रतिदिन बड़ी विश्वासयोग्यता के साथ अन्य लड़कों के साथ प्रार्थना में सहभागी होने के लिए, वापस चैपल जाने लगा। मुझे बाइबल पढ़ने में आनंद आने लगा और पाने की चाह मुझमें

उत्पन्न हुई! मैं सुबह जल्दी उठकर अपनी बाइबल पढ़ता और प्रार्थना करता, और यह "सुबह का समय" बढ़ता रहा।

एक साल बाद, मिस्टर एन्ड्र्यू टायलर ने कुछ लड़कों को जो उनकी अगुवाई में चल रहे दोपहर के प्रार्थना समूह में सहभागी होते थे, कि वह उन्हें ऐसी कलीसिया में ले जाएगा जहां पर हमारे लिए पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने हेतु प्रार्थना की जाएगी। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा क्या है इस विषय पर उन्होंने हमें कुछ वचन बताए। हम सभी अत्यधिक उत्सुक थे। मैंने इस बात को बड़ी गंभीरता से ग्रहण किया और इस विषय पर और प्रेरितों के कामों की पुस्तक के आरंभ के अध्यायों में जो कुछ हुआ उस विषय में पवित्र शास्त्र के वचन पढ़ने में काफी समय बिताया। अंत में वह शनिवार का दिन आ गया, जब वे हम में से कुछ जवान लड़कों को गॉस्पल स्ट्रीट, बैंगलोर में स्थित असेम्ब्लीज़ ऑफ गॉड चर्च ले गए। मुझे याद है कि वह चर्च एक टिन के छत से बने हुए स्थान में होता था, मुझे ऐसा लगता है कि उस समय गिरजाघर की इमारत बन रही थी। असेम्ब्लीज़ ऑफ गॉड चर्च में मैं पहली बार गया था, और क्या अपेक्षा करें इस विषय में मैं नहीं जानता था। सभा का आरंभ कुछ गीतों के साथ हुआ। आवाज़ इतनी ऊंची थी कि मेरे कान बधिर होने लगे, वह सब कुछ कानों के लिए अत्यंत कटू स्वर था, और जब गीत गाना बंद हुआ, तब मैं प्रसन्न हो गया। प्रचार भी शोरभरा था – लाऊड स्पीकर लगे थे, और साथ ही साथ मुझे इस प्रकार किसी को प्रचार करते हुए सुनने की आदत नहीं थी। और फिर वह समय आया जब कुछ लोग हम लड़कों के लिए प्रार्थना करने लगे। सब कुछ गड़बड़ लग रहा था – शोर शराबा – और क्या अपेक्षा करें और क्या कहें, इस विषय में मैं कुछ नहीं जानता था। यह इसलिए नहीं कि वे गलत थे, केवल मैंने पहले ऐसी बातें नहीं देखी थीं। उन्होंने हमसे कहा कि हम "बोलें," "बस वह बोलें" – और मैं सचमुच इच्छा करने लगा कि काश मैं बोल पाता, परंतु मैं नहीं जानता था कि कैसे! मुझे केवल यह याद है कि मैंने एक अस्पष्ट, न समझने वाला अक्षर बोला, और उस विषय में भी मैं इतना उलझन में पड़ गया कि कहीं मैंने वह

अपने मन से नहीं कहा, या यह सचमुच परमेश्वर था। मैं सभा समाप्त होने का इन्तज़ार कर रहा था और जब सभा समाप्त हुई, तब मैं बहुत खुश हो गया।

उस शाम मैं घर गया, और शांत स्थान में मुझे बड़ी राहत मिली, और जो कुछ मैंने देखा और सुना था, उसके विषय में सोचने लगा, और उससे अधिक मैंने यह संकल्प कर लिया था कि मैं उस वास्तविकता को अनुभव करने जा रहा हूं जिसके विषय में यीशु ने कहा था कि वह अपने शिष्यों को देगा। जब मैं अकेले अपने बिछौने के पास घुटनों पर बैठकर शांति से, और एक चौदह वर्ष के बच्चे के सरल विश्वास के साथ परमेश्वर की खोज में लगा हुआ था, तब मैं अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगा। मुझे सब कुछ नहीं समझा, परंतु मैंने बच्चे के समान विश्वास के छोटे छोटे कदम उठाए और उन शब्दों को बोलने लगा जो मेरे अन्दर से निकल आ रहे थे। परंतु, मेरे मन में कई विचार और प्रश्न चल रहे थे – क्या मैं स्वयं इन शब्दों को बना रहा हूं? मैं कैसे जानूं कि यह पवित्र आत्मा की ओर से है? यदि जो कुछ मैं कह रहा हूं, उसे मैं नहीं समझता, तो उसका क्या उपयोग? जब मैं अन्यान्य भाषाओं में बोलता हूं, तब मुझे कुछ भी असामान्य, अनोखा या अलौकिक महसूस नहीं होता, क्या मुझे महसूस करना चाहिए? मैं उन्हीं या समान स्वरों को दोहराता हुआ प्रतीत कर रहा था, क्या मैं सचमुच कोई भाषा बोल रहा हूं? कई प्रश्न, जो बालक के समान मेरे विश्वास को मिटाते हुए प्रतीत हो रहे थे। परंतु मेरा संकल्प सरल था – यदि यह बाइबल में है और यदि यीशु ने कहा है, और शिष्यों ने उसे पाया है, तो यह मेरे लिए सच होना चाहिए। मैं इस सत्य के साथ रह रहा हूं! जब मैं परमेश्वर के वचन का और अध्ययन करने लगा, तब मुझे और यकीन हो गया कि जो कुछ मैं अनुभव कर रहा था और बोल रहा था वह सचमुच परमेश्वर की ओर से था। परमेश्वर का वचन मेरे सारे संदेह और भय को मिटाने लगा। मैंने अन्य–अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने के विषय में परमेश्वर के वचन से जो समझ प्राप्त की थी और अन्य–अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने के अद्‌भुत लाभों के विषय में सिखा था, उसके

द्वारा मेरे मन में उत्पन्न प्रश्न और संदेह दूर हो गए। उस समय से मैं अन्य–अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर रहा हूं और इस प्रकार की प्रार्थना मेरे प्रार्थना समय का अधिकतर भाग होती है। निरंतर प्रार्थना में, केवल आत्मा में प्रार्थना करने में कई घण्टे प्रार्थना करने योग्य होना बड़े आनंद की बात है। आप भी ऐसा कर सकते हैं!

इस अध्याय में, अन्य–अन्य भाषाओं के विषय पर कुछ आम प्रश्नों का परीक्षण किया गया है और इन प्रश्नों के बाइबल आधारित उत्तर साधारण और समझने हेतु सरल शब्दों में प्रस्तुत किए गए हैं। "अन्य अन्य भाषाओं में बोलना" और "अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना" और "आत्मा में प्रार्थना करना" इन शब्दों का प्रयोग इस पुस्तक में अदल–बदल कर किया गया है, और जब तक कि स्पष्ट रूप से कुछ बताया न जाए, सभी उदाहरणों में इसका अर्थ "अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना" है। पवित्र शास्त्र में कई वचन हैं जिन्हें इन्हीं वचनों में प्रस्तुत किए गए विभिन्न मुद्दों पर विचार करने हेतु बार बार उल्लेख किया जाएगा।

प्रश्न 1. अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना क्या है?

यह उन मूल प्रश्नों में से एक है जो विश्वासी प्रायः पूछते हैं। यह "अन्य अन्य भाषाएं" क्या हैं (या कुछ लोग 'ग्लॉसोलेलिया' इस संज्ञा का उपयोग करते हैं)?

अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना एक न सीखी हुई भाषा में प्रार्थना करना है जो "मनुष्यों की भाषा हो सकती है और स्वर्गदूतों की भाषा हो सकती है।"

अन्य भाषााओं में प्रार्थना करना परमेश्वर का अलौकिक वरदान है और इसे हम अध्ययन की स्वाभाविक प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त नहीं कर सकते। कुछ भाषा विज्ञानी हैं – जिन्हें कई भाषाएं सीखने और उनके साथ कार्य करने का स्वाभाविक गुण प्राप्त होता है। कई लोग इसे प्रदर्शित करते हैं, उद्धार न पाए हुए लोग भी, परंतु ज़रूरी नहीं है

कि वे अपने हुनर का उपयोग परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए करें। परंतु नये नियम में जिसका उल्लेख किया गया है उस "अन्य अन्य भाषा में बोलना" स्वाभाविक भाषा कौशल नहीं हैं जो व्यक्ति के पास होता है, परंतु यहां पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने हेतु पवित्र आत्मा द्वारा दी गई एक या अधिक भाषाओं का अलौकिक प्रतिदान है। पिन्तेकुस्त के दिन यही हुआ जब 120 यहूदी विश्वासियों ने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाया।*"और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रे. काम 2:4)।* जो यहूदी मध्यपूर्व के विभिन्न अन्य भागों में रहते थे, जो कटनी का पर्व (पिन्तेकुस्त का पर्व) मनाने हेतु यरूशलेम आए थे, *"वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे, "देखो, ये जो बोल रहे हैं, क्या सब गलीली नहीं? तो फिर क्यों हममें से हर एक अपनी अपनी जन्मभूमि की भाषा सुनता है?"* (प्रे. काम 2:7,8)।

बाद में कुरिन्थियों को लिखी हुई पत्री में पौलुस अन्य अन्य भाषाओं बोलने का उल्लेख करता है और कहता है, *"यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झांझ हूं"* (1 कुरिन्थियों 13:1)। वह अन्य भाषाओं या अन्य आत्मिक वरदानों के उपयोग का, या जो भले काम हमें करने हैं उनका उपहास नहीं कर रहा था। वह केवल प्रेम में चलने के उच्च उद्देश्य को निवेदन करता है, जिस पर 1 कुरि. 13 में ज़ोर दिया गया है, जबकि हम उन सारी बातों को करते हैं जिन्हें करने हेतु परमेश्वर ने हमें बुलाया है। अतः अन्य अन्य भाषाओं का उल्लेख करते हुए, पौलुस कहता है कि हम संसारिक भाषाएं बोलते हों या स्वर्गदूतों की भाषा में। परमेश्वर सभी भाषाओं को समझता है, मनुष्यों की और स्वर्गदूतों की भी, और इसलिए वह कहा गया हर शब्द समझता है। हम यहां एक और बात कह सकते हैं कि यदि विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में बोलता था, और स्वर्गदूतों की भाषाओं में बोलता था, तो और कोई व्यक्ति न होता जो उस भाषा का अर्थ बता पाता, जब तक कि अर्थ बताने हेतु पवित्र आत्मा द्वारा अलौकिक योग्यता उन्हें प्राप्त न होती।

अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना पवित्र आत्मा द्वारा दी गई प्रार्थना करने की सामर्थ है

"और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रे. काम 2:4)।

"इसलिए यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती" (1 कुरिन्थियों 14:14)।

"इसलिए यदि मैं अन्य (अज्ञात) भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा (मेरे अंदर वास करने वाला पवित्र आत्मा) प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि निष्फल होती है (वह फल नहीं लाती और किसी की सहायता नहीं करती)" (एम्प्लिफाईड बाइबल के अनुसार 1 कुरिन्थियों 14:14)।

जब हम अन्य अन्य भाषााओं में प्रार्थना करते हैं, हमारी आत्मा पवित्र आत्मा से सामर्थ पाकर प्रार्थना करती है। भाषा, शब्द और सूचना का स्रोत पवित्र आत्मा होता है। पवित्र आत्मा यह हमारे आत्माओं में उण्डेलता है। विश्वास के द्वारा और हमारी इच्छा के कार्य के रूप में, हम इसे बोलते हैं और हमारी आत्मा से ये शब्द हमारे वाचिक अंगों द्वारा प्रवाहित होते हैं, और इस कारण स्वर, आवृत्ति, स्वरों का उतार–चढ़ाव और आवाज़ के रूप में निकल आते हैं। अतः प्रार्थना की विषयवस्तु पवित्र आत्मा की ओर से आती है और हम प्रार्थना में उसके साथ सहभागी बनते हैं और जो वह हमारे लिए चाहता है, उसके विषय में प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना ऐसी प्रार्थना है जो पवित्र आत्मा की सामर्थ से की जाती है। इस समय में हमारी बुद्धि समझ नहीं पाती कि क्या प्रार्थना की जा रही है – इस कारण हमारी समझ निष्फल होती है। जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तब बुद्धि को "अवकाश प्राप्त होता है," क्योंकि हमारी आत्मा पवित्र आत्मा से सामर्थ पाकर प्रार्थना करती है।

अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना सीधे परमेश्वर के साथ बात करने का परमेश्वर द्वारा दिया गया तरीका है और जो कुछ कहा जाता है, उसे वह समझता है

"क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है" (1 कुरिन्थियों 14:2)।

"इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है। और मनों का जांचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है" (रोमियों 8:26,27)।

अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने का मूल उद्देश्य, मनुष्यों से बात करना नहीं है, परंतु परमेश्वर से बात करना है। अन्य अन्य भाषाओं में बोलना हमें मुख्य रूप से प्रार्थना की भाषा के रूप में दिया गया है। अन्य अन्य भाषाओं में बोलने की अन्य अभिव्यक्तियां हैं (जिनका उल्लेख बाद में किया जाएगा), मूल उद्देश्य हमारे लिए परमेश्वर के साथ वार्तालाप करने का एक तरीका है, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 14:2 में बताया गया है।

रोमियों 8:26,27 में, प्रेरित पौलुस वर्णन करता है कि किस प्रकार पवित्र आत्मा हमारी दुर्बलताओं में हमारी सहायता करता है, और अभिप्रेरित मध्यस्थी के द्वारा जैसी प्रार्थना हमें करनी चाहिए उस प्रकार प्रार्थना करने में हमारी मदद करता है, जिसे "आंहे भर भरकर बयाने से बाहर" प्रार्थना करना कहा जाता है, अर्थात् इस प्रकार कराहना या आंहे भरना जिसे समझा नहीं जा सकता। हम जानते हैं कि हम इस प्रकार मध्यस्थी करने में पवित्र आत्मा के साथ सहभागी हो रहे हैं और कार्य कर रहे हैं, क्योंकि पद 27 में, पौलुस कहता है कि परमेश्वर हमारे

हृदयों को देखता है और वह समझता है कि पवित्र आत्मा क्या व्यक्त करना चाहता है।

अतः रोमियों 8:26–27 से मुख्य मुद्दा यह है कि जब मैं पवित्र आत्मा की सहायता से प्रार्थना करता हूं, तब मैं मध्यस्थी करता हूं, अक्सर ऐसे स्वरों में जिन्हें समझा नहीं जा सकता। परमेश्वर जो मेरे हृदय में देखता है, जो कुछ इस मध्यस्थता के द्वारा व्यक्त किया जा रहा है और कहा जा रहा है, उसे समझता है। इस मध्यस्थी में जो कुछ कहा जा रहा है और व्यक्त किया जा रहा है, वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है। और अंत में, इस तरह पवित्र आत्मा की सहायता से मध्यस्थी (प्रार्थना) करना मेरे लिए पवित्र आत्मा की ओर से सहायता पाना है ताकि शरीर की निर्बलता पर जय पाई जा सके (शरीर के पापमय कामों को क्रूस पर चढ़ाना, जैसा कि रोमियों 8:13 में बताया गया है)।

अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना भेद की बातें बोलना है

"क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है" (1 कुरिन्थियों 14:2)।

"परन्तु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं। परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है" (1 कुरिन्थियों 2:9,10)।

जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तब हम भेद की बातें बोलते हैं। भेद की बातें ऐसी बातें हैं जो मनुष्य की बुद्धि के लिए अज्ञात हैं, परंतु परमेश्वर का आत्मा उनके विषय में जानता है। ऐसी बातें हो सकती हैं जो भूतकाल में हुई, जो वर्तमान में हो रही हैं या

भविष्य में होने वाली हैं जिनके विषय में मैं कुछ नहीं जानता। मेरे विषय में या किसी और के विषय में कुछ बातें हो सकती हैं जिनके लिए प्रार्थना करने की ज़रूरत है, परंतु मेरी बुद्धि इस विषय में नहीं जानती। जब मैं अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करता हूं, क्योंकि पवित्र आत्मा सारी बातें जानता है, वह मेरे द्वारा ऐसी प्रार्थना (मध्यस्थी) मुक्त कर सकता है, और उसी बात के लिए। उदाहरण के तौर पर, मान लीजिए कि ऐसे किसी व्यक्ति के जीवन में जिसे मैं जानता हूं, कुछ बात होने वाली है, आने वाले सप्ताहों में जिसके विषय में मुझे कल्पना नहीं होगी। परंतु जब मैं अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करता हूं, जब पवित्र आत्मा मेरे द्वारा उस व्यक्ति की ज़रूरत के लिए प्रार्थना करता है, ऐसी बात के विषय में मुझे ज्ञान नहीं है, और अक्सर मुझे यह भी ज्ञान नहीं होगा कि मैंने उस ज़रूरत के लिए प्रार्थना की है। परंतु "काम" पूरा किया गया है!

नये नियम में "भेद" इस शब्द का उपयोग (1 कुरिन्थियों 2:7) परमेश्वर की छिपी हुई बुद्धि, योजनाओं और उद्देश्यों के लिए किया गया है। यह उन बातों का उल्लेख करता है जिन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार की हैं, ऐसी बातें जिन्हें मनुष्य की आंखों ने नहीं देखा है, और न कानों ने सुना है, और मनुष्यों के चित्त में चढ़ी हैं। "परमेश्वर की कुछ गहरी बातें हैं" जो सब आत्मा जानता है। परंतु जब हम आत्मा में प्रार्थना करते हैं, तब हम परमेश्वर की छिपी हुई बुद्धि के साथ, परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों के विषय में और परमेश्वर की गहरी बातों के विषय में प्रार्थना करते हैं। इन बातों के विषय में परमेश्वर को जानकारी देने हेतु हम इन भेद की बातों के विषय में प्रार्थना नहीं कर रहे या उन्हें बोल नहीं रहे – क्योंकि वह उनके विषय में पहले ही जानता है। बल्कि, हम "इन भेदों के साथ" ऐसे कुछ कारणों से प्रार्थना करते हैं जिनका सम्बंध यहां पृथ्वी पर हमसे है। सबसे पहले, मैं विश्वास करता हूं कि, हम इन भेद की बातों को प्रार्थना में कहते हैं ताकि वे यहां पृथ्वी पर पूरी हों, जैसे स्वर्ग में होता है। परमेश्वर ने हमारे लिए इन बातों की योजना बनाई है और हम जब अन्य अन्य

भाषाओं में प्रार्थना करते हैं तब पवित्र आत्मा की सहायता से यहां पृथ्वी पर उनके विषय में प्रार्थना करते हैं। दूसरी बात, हम इन भेद की बातों के विषय में प्रार्थना करते हैं, ताकि वे आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट की जाएं (1 कुरिन्थियों 2:10)। हमारा आत्मा परमेश्वर की बुद्धि, योजनाओं, उद्देश्यों, और गहरी बातों की समझ प्राप्त करता है।

अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने को "आत्मा में प्रार्थना करना" भी कहा जाता है

"इसलिए यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। इसलिए क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा। नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन क्यों कहेगा? इसलिए कि वह तो नहीं जानता कि तू क्या कहता है?" (1 कुरिन्थियों 14:14–16)।

"और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो" (इफिसियों 6:18)।

इस बात पर ध्यान दें कि अन्य अन्य भाषाओं में बोलना इस शब्द प्रयोग का संदर्भ देने के लिए पौलुस "अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना," "आत्मा में प्रार्थना करना," "आत्मा के साथ गाना," "आत्मा के साथ आशीष देना," आदि शब्दों का किस प्रकार प्रयोग करता है। अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने को "आत्मा में प्रार्थना करना" भी कहा जाता है, क्योंकि जब हम प्रार्थना करते हैं तब हमारी आत्मा पवित्र आत्मा के द्वारा योग्यता पाती है। नये नियम में, जहां कहीं हम पौलुस को "आत्मा में प्रार्थना करने" का उल्लेख करते हुए पाते हैं, तब वह "अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने" के विषय में कहता है। प्रारंभिक कलीसिया इस विषय में यही समझती थी। जो कुछ हम जानते हैं

उसके अनुसार, नये नियम का लेखन मुख्य रूप से पिन्तेकुस्त के दिन के बाद किया गया और इस कारण अन्य अन्य भाषाएं बोलने वाले मसीहियों द्वारा उनका लेखन हुआ। अतः जो कुछ लिखा गया है और जिस भाषा का उपयोग किया गया है, उन विश्वासियों की ओर से आयी जिनके लिए अन्य अन्य भाषाओं में बोलना एक सामान्य बात थी। प्रेरित पौलुस, जिसने नये नियम का दो तिहाई भाग लिखा, कहता है,"मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैं तुम सब से अधिक अन्यान्य भाषा में बोलता हूं" (1 कुरिन्थियों 14:18)। इस कारण यह अनुमान लगाना सुरक्षित होगा कि "आत्मा में प्रार्थना करना" इस संज्ञा का अर्थ केवल बड़े आवेश के साथ, या गहरी भावनाओं के साथ या और अधिक उत्साह के साथ प्रार्थना करना नहीं है – जैसा कि कुछ लोग समझाने का प्रयास करते हैं। आत्मा में प्रार्थना करने का अर्थ अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना है, यद्यपि इसके साथ प्रबलता, आवेश, अनुरोध, भावना, उत्साह, बयाने से आंहे भरना आदि हो सकता है।

प्रश्न 2. कई प्रकार की भाषाएं क्या हैं?

"वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है। और सेवाएं भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है। और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है" (1 कुरिन्थियों 12:4–6)।

उपर्युक्त वचनों में "कई प्रकार के" और "कई प्रकार की" इन शब्दों के लिए समान यूनानी शब्द श्कपंपतमेमपेश का उपयोग किया गया है, जिसका अर्थ है विशिष्टताएं, भेद, वितरण, विविधताएं, बहुसंख्य, अनगिनत, विभिन्न प्रकार की।

निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें:

- कई प्रकार के **वरदान** हैं, परंतु एक ही स्रोत – पवित्र आत्मा। "वरदान" शब्द यूनानी भाषा के *"कॅरिस्मेटा"* से आया है जिसका

अर्थ है "आत्मिक दान," "ईश्वरीय अनुदान," "विनामूल्य वरदान।" वह पवित्र आत्मा इन सारे वरदानों का स्रोत है।

- कई प्रकार की **सेवाएं।** "सेवाएं" (प्रशासन) यूनानी भाषा के *"डायकोनिया"* diaireseis' से लिया गया है, जिसका अर्थ है, "सेवक, सेवा संस्थान, कार्यालय, आदि" के द्वारा की गई सेवा। उसी प्रभु की सेवा की जा रही है।
- कई प्रकार के **कार्य।** "कार्य" शब्द यूनानी भाषा के *"एनर्जीमा"* *'energema'* से लिया गया है जिसका अर्थ है, "किए गए कार्य का प्रभाव (*एनर्जीओसे* – कार्य करना, सम्पादन करना, शक्ति प्रदान करना) परिचालन, कार्य।" वही परमेश्वर कार्य करता है।

इसी वरदान का उपयोग (अन्य अन्य भाषाएं) कई प्रकार के कार्यों के साथ कर्द प्रकार की सेवाओं/सेवकाइयों में किया जा सकता है, हर एक के द्वारा भिन्न प्रभाव या परिणाम उत्पन्न होगा। उदाहरण के लिए, अगुवाई के वरदान का उपयोग कई प्रकार की सेवाओं में किया जा सकता है। कोई सेल ग्रूप लीडर के रूप में सेवा कर सकता है, और कोई स्तुति और आराधना अगुवे के रूप में सेवा कर सकता है, कोई और पहुनाई की सेवकाई में अगुवे के रूप में, कोई प्रकाश के अगुवे के रूप में सेवकाई कर सकता है। इनमें से हर एक की सेवकाई भिन्न है, परंतु वे एक ही प्रभु की सेवा कर रहे हैं। यद्यपि कार्य करने का तरीका अलग है, फिर भी इन सेवकाइयों में से हर एक के द्वारा अगुवाई का वरदान कार्य कर रहा है। सेल ग्रूप अगुवा सेल ग्रूप का ध्यान रखता है और आराधना का अगुवा आराधना का संभालता है। आराधना अगुवे के मामले में, परिणाम और कार्य आराधना है। अतः उसी वरदान – अगुवाई – का उपयोग विभिन्न सेवाओं में, उपयोग किया जा सकता है ताकि कई कार्य प्रगट हों। उसी तरह अन्य अन्य भाषाओं के वरदान का उपयोग कई सेवाओं में या सेवकाइयों में किया जा सकता है जिसका परिणाम कई प्रकार के कार्यों और परिणामों में होता है।

कभी कभी हम गलती से सोचते हैं कि केवल एक ही प्रकार की अन्य अन्य भाषाएं हैं। वास्तव में भिन्न भिन्न प्रकार की भाषाएं हैं। कुछ लोग यह सोचने की भूल करते हैं कि अन्य अन्य भाषाओं से केवल एक ही उद्देश्य पूरा होता है। बल्कि अन्य अन्य भाषाओं का उपयोग कई प्रकार की सेवाओं में होता है। किस सेवकाई के लिए उसका उपयोग किया जा रहा है इसके आधार पर अन्य अन्य भाषाओं का उद्देश्य अलग होता है। कुछ लोग गलती से सोचते हैं कि अन्य अन्य भाषाएं केवल एक ही निश्चित रीति से कार्य करती हैं। परंतु अन्य अन्य भाषाओं का उपयोग अलग अलग रीति से होता है, हर एक के द्वारा भिन्न प्रभाव या परिणाम उत्पन्न होता है। हम सेब, टमाटर और संतरा एक ही टोकरी में रखकर उन्हें सेब नहीं कहते! उससे भारी उलझन उत्पन्न होगी। हमें विभिन्न सेवाओं और कार्यों में अन्य अन्य भाषाओं के उपयोग के बीच भेद को समझ लेना है।

अन्य अन्य भाषाओं के प्रकार

कई प्रकार की भाषाएं हैं। उनका एक ही स्रोत है – पवित्र आत्मा – परंतु उनकी सेवा और कार्य भिन्न हैं।

"फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख; और किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना" (1 कुरिन्थियों 12:10)।

> प्रकार (ग्रीक '*जेनोस*') = 'रिश्तेदार,' "एक ही वंश के भिन्न संतान, देशवासी, सगोत्र, विविधता, आदि।

उदाहरण के लिए, छः बच्चों के परिवार के विषय में विचार करें। वे हर एक भिन्न हो सकते हैं, परंतु वे एक ही परिवार के हैं। इसीलिए हमारे पास भिन्न भिन्न प्रकार की भाषाएं हैं – कार्य आदि के स्वरूप में भिन्न – परंतु वे एक ही पवित्र आत्मा से आते हैं। यहां पर अन्य अन्य

भाषाओं के कुछ प्रकार हैं, परंतु जरूरी नहीं कि यह एक संपूर्ण सूची हो :

1. *व्यक्तिगत प्रार्थना भाषा के रूप में अन्य अन्य भाषाएं – सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध*

"क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है। जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है" (1 कुरिन्थियों 14:2,4)।

"और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे" (मरकुस 16:17)।

इस प्रकार की अन्य अन्य भाषाएं सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध हैं और हमारे व्यक्तिगत प्रार्थना जीवनों में एक माध्यम के रूप में उपयोग की जाती हैं कि हम परमेश्वर की भेद की बातों को प्रार्थना में कहें। इसका अर्थ बताने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह विश्वासी और प्रभु के बीच की बात है। परमेश्वर श्रोता है और उसे अनुवाद की आवश्यकता नहीं है! विश्वासी परमेश्वर से प्रार्थना करता है और उसे किसी और को समझने की ज़रूरत नहीं है।

2. *अनुवाद के लिए अन्य अन्य भाषाएं*

"इस कारण जो अन्य भाषा बोले, तो वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके। यदि अन्य भाषा में बातें करनी हों, तो दो दो, या बहुत हो तो तीन तीन जन बारी बारी बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे। परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करे" (1 कुरिन्थियों 14:13,27,28)।

दूसरे प्रकार की भाषाएं, वह होती हैं जब मंडली को या सभा को अन्य अन्य भाषाओं में संदेश दिया जाता है। यह संदेश श्रोताओं को अन्य अन्य भाषाओं में दिया जाता है और उसका अनुवाद करने की ज़रूरत है। इसकी सेवा अत्यंत सुनिश्चित और भिन्न है – श्रोताओं को आशीष देने के लिए। अनुवाद के लिए अन्य अन्य भाषाओं के संबंध में सूचनाएं दी गई हैं (1 कुरिन्थियों 14:13,27,28)।

3. गहरी मध्यस्थी के लिए अन्य अन्य भाषाएं

"इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है। और मनों का जांचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है" (रोमियों 8:26,27)।

"और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो" (इफिसियों 6:18)।

यह अन्य अन्य भाषाओं का एक और प्रकार है और व्यक्तिगत प्रार्थना या सार्वजनिक अनुवाद के लिए दी जाने वाली अन्य अन्य भाषाओं से भिन्नता रखती हैं। इस प्रकार की अन्य अन्य भाषाओं का उपयोग मध्यस्थी के लिए होता है, और इसका संबंध अक्सर ऐसी आहों से होता है जो बयाने से बाहर हैं या गहरी भावना से होता है। यह हमारे अपने लिए या अन्य पवित्र जनों के लिए मध्यस्थी करने हेतु उपयोग होती हैं। इस गहरी मध्यस्थी का उपयोग शरीर की निर्बलता पर विजय पाने के लिए भी होता है, जैसे रोमियों 8 के संदर्भ में बताया गया है।

4. अविश्वासियों के लिए चिन्ह के रूप में अन्य अन्य भाषाएं

"इसलिए अन्यान्य भाषाएं विश्वासियों के लिए नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिए चिन्ह हैं, और भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिए नहीं, परन्तु विश्वासियों के लिए चिन्ह है" (1 कुरिन्थियों 14:22)।

"और वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे, "देखो, ये जो बोल रहे हैं, क्या सब गलीली नहीं? तो फिर क्यों हममें से हर एक अपनी अपनी जन्मभूमि की भाषा सुनता है?" (प्रे. काम 2:7,8)।

एक और प्रकार की अन्य अन्य भाषाएं हैं जो अविश्वासियों के लिए चिन्ह के रूप में हैं। यह चिन्ह कई तरह से घटित हो सकता है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आप चीन में हैं। और पवित्र आत्मा की इच्छानुसार, आप जहां कहीं हैं, वहां पवित्र आत्मा आपके द्वारा चीनी भाषा बुलवाता है। आप अत्यंत स्पष्ट चीनी भाषा बोल पा रहे हों, और फिर भी आप इस बात को नहीं जानते हों कि आप क्या कह रहे हैं। आपकी सुनने वाले लोगों के लिए यह अर्थपूर्ण होगा, परंतु आप स्वयं नहीं समझते कि आप क्या कह रहे हैं! अंत में, आप लोगों को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में यीशु की ओर अगुवाई भी कर पाते हैं, परंतु आप पूर्ण रूप से अनजान हैं कि आपने क्या कहा है। यह एक उदाहरण है कि किस प्रकार अन्य अन्य भाषाएं अविश्वासियों के लिए चिन्ह के रूप में कार्य करती है। ऐसा ही पिन्तेकुस्त के दिन हुआ जब वे सब अपने श्रोताओं की भाषा बोल रहे थे। इस प्रकार की अन्य अन्य भाषाओं का उपयोग प्रत्येक आराधना सभा या व्यक्तिगत् प्रार्थना समयों में नहीं होता।

5. नाना प्रकार की भाषाओं का सेवा वरदान

"और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रधान, और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले" (1 कुरिन्थियों 12:28)।

इस पद में, प्रेरित पौलुस विशिष्ट सेवादानों के विषय में बोल रहा है (जिन्हें सेवा पद या सेवा कार्य भी कहा जाता है) जो विशिष्ट रूप से मसीह की देह में कुछ लोगों को दिए जाते हैं और अभिषेक किए जाते हैं। इन पदों में से एक का सम्बंध विशिष्ट रूप से "नाना प्रकार की भाषाओं से" है। यह अन्य अन्य भाषाओं का उपयोग है जो उनके द्वारा प्रयुक्त होती हैं जो इस कार्य के लिए अलग किए गए हैं। जिस प्रकार हर व्यक्ति वचन सिखा सकता है, परंतु केवल कुछ ही लोगों को मसीह की देह में शिक्षक के पद पर कार्य करने हेतु बुलाया जाता है। उसी तरह, सभी विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकते हैं, परंतु कुछ विश्वासियों को नाना प्रकार की भाषाओं के सेवा पद पर कार्य करने हेतु मण्डली में नियुक्त किया जाता है। यह अन्य सेवादानों या कार्यों के लिए भी सच है, उदाहरण के तौर पर, प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, शिक्षक आदि।

पांच नाना प्रकार की भाषाओं को समझना महत्वपूर्ण क्यों है? क्योंकि अन्य अन्य भाषाएं किस तरह कार्य करती हैं, वे कौन सा उद्देश्य पूरा करती हैं, और कौन सा प्रभाव वे ले आती हैं, यह समझना महत्वपूर्ण है। उपर्युक्त हर एक में उनके उपयोग के लिए दिए गए निर्देश भिन्न हैं। कभी कभी लोग अनुवाद के लिए अन्य अन्य भाषाओं के निर्देशों को लेकर उन्हें हर अन्य प्रकार की भाषाओं के लिए लागू करते हैं। परंतु ऐसा नहीं हो सकता! हमें यह समझने की ज़रूरत है कि कौन सी अन्य भाषाएं कार्यरूप में हैं और उनके लिए उचित नियमों को लागू किया जाना चाहिए। अन्य अन्य भाषाओं का उनके लाभों के आधार पर वर्गीकरण किया जा सकता है।

प्रश्न 3. क्या हर एक विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकता है?

लोग यह प्रश्न भी पूछते हैं। और इसका उत्तर 'हां' है। हर एक विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकता है, यद्यपि हम जानते हैं कि सभी विश्वासी ऐसा नहीं करते! यह उद्धार के वरदान के समान

है। हर एक विश्वासी उद्धार पा सकता है, यद्यपि हम जानते हैं कि सभी का उद्धार नहीं होता।

यह कहने का आधार हर एक विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकता है:

- **क्योंकि यीशु ने कहा कि विश्वासी नई भाषा बोलेंगे।**

"और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे" (मरकुस 16:17)।

यह प्रतिज्ञा करता है कि नई भाषाओं में बोलने की योग्यता उस हर व्यक्ति के लिए है जो विश्वास करता है। उसने यह नहीं बताया कि व्यक्ति कितने समय से विश्वासी होना चाहिए, परंतु केवल यह कहता है कि यह उन सभों के लिए है "जो विश्वास करते हैं।"

- आत्मा की प्रतिज्ञा के कारण

"कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे" (प्रे. काम 2:17,18)।

पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुममें से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।" (प्रे. काम 2:38,39)।

आत्मा की प्रतिज्ञा हर एक के लिए है। प्रे. काम 2:17,18 में लिखा है कि वह सभी प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलेगा। क्योंकि उसने कहा है कि “सभी,” हर एक व्यक्ति यह वरदान पाने की योग्यता रखता है। उसी तरह प्रे. काम 2:38,39 में पतरस बताता है कि यह प्रतिज्ञा उन सभों के लिए है, “जिन्हें प्रभु बुलाएगा।” यह प्रतिज्ञा हर एक के लिए है जिन्हें प्रभु बुलाएगा। विश्वास पाने वाले जब इस प्रतिज्ञा को प्राप्त करते हैं, तब क्या होता है? प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुवर्ती लेखों में आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त करने वाले लोगों के ऐसे पांच उदाहरण हैं और उसके बाद वे तुरंत अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे। प्रेरितों के कामों की पुस्तक में जितनी बार आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त की गई, ऐसा देखा जा सकता है कि उसे पाने वाले तुरंत या अंततः अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे। केवल एक उदाहरण में (प्रे. काम 8) अन्य अन्य भाषाओं का उल्लेख नहीं है, परंतु कुछ अलौकिक वहां घटित हुआ जिससे किसी ने उस वरदान को धन देकर मोल लेना चाहा। परंतु अन्यथा हम पढ़ते हैं कि जिन्होंने आत्मा का वरदान पाया वे या तो तुरंत या तो अंततः अन्य अन्य भाषाएं बोलने लगे। इसलिए अब हम क्यों सोचें कि परमेश्वर ने अचानक ऐसा करना बंद कर दिया है, जबकि नये नियम में ऐसा कुछ बताया नहीं गया है कि परमेश्वर आत्मा के उण्डेले जाने को रोकेगा या कलीसिया को आत्मा के वरदान देना बंद कर देगा?

अब मैं समझता हूं कि कुछ लोग इस पद का उद्धरण देते हैं: 1 कुरिन्थियों 13:9,10, “क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी। परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।” वे पूरे हुए वचनों को (बाइबल) “सर्वसिद्ध” कहेंगे और कहेंगे कि क्योंकि हमारे पास पवित्र शास्त्र है, इसलिए अब हमें आत्मा के वरदानों की, उदाहरण के तौर पर, भविष्यद्वाणी आदि की ज़रूरत नहीं है। परंतु, पवित्र शास्त्र का स्पष्टीकरण बाकी वचनों के प्रकाश में किया जाना चाहिए। बाकी नया नियम क्या सिखाता है? सबसे पहले, हम देखते हैं कि मसीह के पास कलीसिया के लिए सेवा दान नियुक्त किए गए हैं, विश्वासियों को

सिद्ध बनाने हेतु और सुसज्जित करने हेतु (इफिसियों 4:10,11; 1 कुरिन्थियों 12:28)। हम सभी इस बात से सहमत होंगे कि ये अब भी अमल में हैं, क्योंकि विश्वासियों को अब भी परिपक्व व सुसज्जित होने की ज़रूरत है। इन सेवा वरदानों का कार्य कलीसिया से हटा नहीं दिया गया है। इन सेवा कार्यों में आश्चर्य के काम, चंगाइयों के वरदान और नाना प्रकार की भाषाएं हैं (1 कुरिन्थियों 12:28)। इसलिए अन्य अन्य भाषाओं में बोलना अब तक समाप्त नहीं हुआ है! दूसरी बात, पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का उद्देश्य महान आदेश को पूरा करना है। महान आदेश को पूरा किए जाने की ज़रूरत है और इस कारण पवित्र आत्मा का बपतिस्मा उसकी सामर्थ और कार्य के साथ आज भी कार्यरत है। परमेश्वर अब भी सारे प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेल रहा है। अतः "सर्वसिद्ध" केवल स्वयं प्रभु के आगमन का उल्लेख करता है। निम्नलिखित पद इसकी स्पष्टी गवाही देता हैः 1 यूहन्ना 3:2, "हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।"

- **आत्मिक वरदानों से सम्बंधित उपदेश के कारण**

"परन्तु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूं" (1 कुरिन्थियों 12:28)।

"प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो। मैं चाहता हूं कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो, परन्तु अधिकतर यह चाहता हूं कि भविष्यद्वाणी करो। क्योंकि यदि अन्यान्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिए अनुवाद न करे, तो भविष्यद्वाणी करनेवाला उससे बढ़कर है। इसलिए हे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो" (1 कुरिन्थियों 14:1,5,39)।

पौलुस हमें उत्साहित करता है कि हम आत्मिक वरदानों की लालसा रखें और प्रेम के अधिक बेहतर मार्ग पर चलें। यदि सभी विश्वासियों को प्रेम के बेहतर मार्ग पर चलना है और प्रेम का अनुसरण करना है, तब यह स्पष्ट है कि सभी विश्वासियों को आत्मिक वरदानों की अत्यधिक लालसा रखना है। अतः यह हमारे हाथ में है। सभी विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने की इच्छा रख सकते हैं, जिस प्रकार सभी विश्वासी यदि चाहे तो, प्रेम में चल सकते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि हर एक विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकता है।

• प्रार्थना के विषय में दी गई शिक्षा के कारण

"और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो" (इफिसियों 6:18)।

"परंतु हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए" (यहूदा 1:20)।

"और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रधान, और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले" (1 कुरिन्थियों 12:28)।

इफिसियों 6:18 में, पौलुस आम तौर पर कलीसिया को लिखते हुए यह आज्ञा देता है कि सभी विश्वासी हर समय आत्मा में प्रार्थना करें। हम जानते हैं कि "आत्मा में प्रार्थना करना" "अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना" है। यह देखना दिलचस्प है कि वह अपनी पत्रियों में आमतौर पर सभी विश्वासियों को सम्बोधित कर रहा है और उनसे अनुरोध करता है कि वे आत्मा में प्रार्थना करें, और न ही लोगों के किसी समूह को जिन्होंने नाना प्रकार की भाषाओं का वरदान पाया है। अतः सभी विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रश्न 4. 1 कुरिन्थियों 12:28–30 के विषय में क्या?

"और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रधान, और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले। क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं? क्या सब उपदेशक हैं? क्या सब सामर्थ के काम करनेवाले हैं? क्या सब को चंगा करने का वरदान मिला है? क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं?" (1 कुरिन्थियों 12:28–30)।

हमारे पास यह विश्वास करने के कई कारण हैं कि अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना सभी विश्वासियों के लिए है, फिर भी हम 1 कुरिन्थियों 12:28–30 का अर्थ समझाएं, जिसे गलत समझा जा सकता है क्योंकि पौलुस कहता है कि हर कोई अन्य अन्य भाषाओं में नहीं बोलता। 1 कुरिन्थियों 12:28 में, पौलुस यह कहते हुए आरम्भ करता है, *"और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं. . ."* कुछ विशिष्ट व्यक्ति मसीह की देह में विशिष्ट कार्य के लिए विशिष्ट रूप से 'नियुक्त किए गए हैं' और इसलिए ये सभी विश्वासियों के लिए नहीं है। पौलुस मसीह की देह में रखे गए 'विशिष्ट वरदानों' या 'सेवा कार्यों' के विषय में बोल रहा है, विश्वासियों की सामान्य सेवकाई के विषय में नहीं।

इसलिए, 1 कुरिन्थियों 12:28 यह वचन 1 कुरिन्थियों 12:7–11 में पहले सूचीबद्ध किए गए आत्मिक वरदानों के विषय में नहीं कहता, जो सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध हैं, परंतु मसीह की देह में विशिष्ट सेवा नियुक्तियों के विषय में कहता है। "क्या सभी अन्य अन्य भाषाएं बोलते हैं?" इस वाक्य को विशिष्ट सेवा नियुक्तियों के संदर्भ में समझा जाना चाहिए और आत्मा के वरदानों के संबंध में नहीं। आम प्रवृत्ति के अनुसार, लोग 1 कुरिन्थियों 12:28–30 इस पद को जल्दबाजी में पढ़ते हैं और यह अनुमान लगाते हैं कि हर व्यक्ति अन्य अन्य भाषाओं में नहीं बोल सकता।

सभी विश्वासी वचन सिखा सकते हैं, परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी विश्वासी जो वचन की शिक्षा देते हैं, वे शिक्षक की सेवा नियुक्ति के लिए कलीसिया में रखे गए हैं। सभी विश्वासी सहायता कर सकते हैं, परंतु सहायता करने वाले सभी विश्वासी सहायता (उपकार) की सेवा के लिए कलीसिया में नियुक्त नहीं किए गए हैं। सभी विश्वासी यीशु के नाम में सामर्थ के कामों और चंगाइयों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं, परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि सामर्थ के कामों और चंगाइयों के लिए प्रार्थना करने वाले सभी विश्वासी कलीसिया में सेवा के लिए नियुक्त किए गए हैं। उसी तरह, सभी विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकते हैं, परंतु कुछ ही लोगों को सेवा कार्यों के लिए नियुक्त किया गया है जहां पर वे नाना प्रकार की भाषाओं में कार्य करते हैं। केवल कुछ लोगों को कलीसिया में नियुक्त किया गया है जहां पर उनके पास सेवा है जिसमें नाना प्रकार की भाषाएं शामिल हैं।

प्रश्न 5. क्या अन्य अन्य भाषाओं का अर्थ हमेशा समझना चाहिए या उसका अनुवाद किया जाना चाहिए?

जैसा कि पीछे बताया गया है, कई प्रकार की भाषाएं हैं। सभी प्रकार की भाषाओं का अनुवाद किए जाने की ज़रूरत नहीं है। जब अन्य अन्य भाषाओं का उपयोग परमेश्वर के ओर से श्रोता के लिए संदेश पहुंचाने के लिए किया जाता है (अन्य अन्य भाषाओं का अनुवाद), तब अन्य अन्य भाषाओं का अनुवाद करने की ज़रूरत होती है (1 कुरिन्थियों 14:6–13, 18, 19, 27, 28)। परंतु इस बात को ध्यान में रखें कि "अविश्वासियों के लिए चिन्ह के रूप में अन्य अन्य भाषाएं" यद्यपि बोलने वाला नहीं समझता और शायद श्रोता भी नहीं समझते, परंतु उसे कुछ विशिष्ट "अविश्वासी" समझ सकते हैं जिन्हें परमेश्वर इन अन्य अन्य भाषाओं के द्वारा, चिन्ह के रूप में सम्बोधित करता है।

प्रश्न 6. क्या मैं जब चाहता हूं तब अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकता हूं?

"इसलिए क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा" (1 कुरिन्थियों 14:15)।

हां! जिस इच्छा का उपयोग हम समझ के साथ प्रार्थना करने के लिए करते हैं, उसी का उपयोग हमारी इच्छा से आत्मा में प्रार्थना करने और गीत गाने हेतु – किसी भी समय, किसी भी स्थान में किया जा सकता है। अतः, कुछ अन्य अन्य भाषाएं, जैसे कि व्यक्तिगत प्रार्थना के रूप में अन्य अन्य भाषाएं, प्रार्थना करने, गीत गाने, मध्यस्थी करने हेतु अन्य अन्य भाषाएं विश्वासी की इच्छा के अनुसार उपयोग की जा सकती हैं – जब और जहां पर विश्वासी ऐसा करना चाहता हो।

परंतु "एक को... दी जाती हैं... जिसे जो चाहता है वह?" के विषय में क्या?

"किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें, और किसी को उसी आत्मा से विश्वास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख; और किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना। परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है" (1 कुरिन्थियों 12:7–11)।

1 कुरिन्थियों में पौलुस जिन कई बातों को सम्बोधित करता है उनका सम्बंध मण्डली से है – जब वे आराधना के लिए इकट्ठा होते हैं (5:4), प्रभुभोज, आदि के लिए (11:17,20)। उसी तरह 1 कुरिन्थियों 12:13,14 ये पद मण्डली के लिए हैं और सभी एक चित्त से चलते हैं।

अतः, 1 कुरिन्थियों 12:7—11 इन वचनों को प्राथमिक तौर पर मण्डली के संदर्भ में समझा जाना चाहिए, अर्थात् एक विशिष्ट क्षण में, वरदानों के प्रगटीकरण की योग्यता के अर्थ में नहीं। विशिष्ट सभा में जब वे इकट्ठा होते हैं (1 कुरिन्थियों 14:26), आत्मा की इच्छा के अनुसार, विभिन्न वरदान आत्मा के द्वारा विभिन्न लोगों को बांट दिए जाते हैं। उसके बाद की सभा में, इस वितरण में भिन्नता हो सकती है, अर्थात् जिसे एक सभा में ज्ञान का वचन प्राप्त हुआ था, वह दूसरी सभा में चंगाइयों के वरदानों का प्रगटीकरण कर सकता है। इस प्रकार सभी विश्वासी विभिन्न समयों में आत्मा के सभी प्रगटीकरणों को पा सकते हैं। ये वरदान आत्मा की इच्छा के अनुसार विश्वासी के द्वारा प्रगट होते हैं।

यद्यपि यह "आत्मा की इच्छा के अनुसार" है, फिर भी हमें एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करना है, वह है, आत्मिक वरदानों की लालसा करना। विश्वासियों से कहा गया है कि वे उत्तम वरदानों की लालसा रखें और आत्मिक वरदानों की चाह रखें (1 कुरिन्थियों 12:31; 14:1)। स्पष्ट रूप से यहां किसी प्रकार की रोक नहीं है — जिसे यह सूचित होता है कि विश्वासी सूचीबद्ध किए गए आत्मा के नौ वरदानों में से किसी भी वरदान की लालसा रख सकता है। हमें उत्तम से उत्तम वरदानों की लालसा रखना है। "उत्तम वरदान" वह वरदान है जो उस परिस्थिति में लागू है। "उत्तम वरदान" वे वरदान हैं जो उस अवसर के लिए जहां पर हमें सेवा और सेवकाई करना है, अत्यंत उपयुक्त हैं। पवित्र शास्त्र में ऐसा उल्लेख नहीं है कि पौलुस ने विश्वासियों को किसी विशिष्ट वरदान की लालसा करने के लिए कहा हो। बल्कि वह उनसे कहता है कि उत्तम वरदानों की लालसा रखो। इसलिए यदि हम किसी बीमार व्यक्ति से मिलते हैं, तो जिस उत्तम वरदान की लालसा करना है, वह चंगाइयों के वरदान, विश्वास का वरदान और सामर्थ के कामों का वरदान होगा। यदि वह ऐसे व्यक्ति से मिलता है जो शारीरिक रीति से स्वस्थ है, परंतु जीवन में आयी हुई समस्याओं के कारण निराश है, तो उत्तम वरदान भविष्यद्वाणी, बुद्धि का वचन होगा

ताकि उसकी समस्या के लिए उपाय खोज निकाले आदि। हमारी इच्छा पवित्र आत्मा की इच्छा के सहयोग में कार्य करती है। पवित्र आत्मा की इच्छा के लिए अब समस्या नहीं है। वह वरदानों को प्रगट करने हेतु, लोगों की ज़रूरत को पूरा करने हेतु और यीशु मसीह की महिमा करने हेतु अधिक इच्छुक है। पवित्र आत्मा इच्छुक है, क्या आप हैं?

प्रश्न 7. क्या मुझे अन्य अन्य भाषाएं बोलने के लिए चीखने, चिल्लाने, कांपने और अजीब बर्ताव करने की ज़रूरत है?

वरदानों का मुक्त किया जाना उस पात्र के नियंत्रण में है जिसके द्वारा पवित्र आत्मा कार्य करने की इच्छा रखता है। *"मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा... और भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है"* (1 कुरिन्थियों 14:15अ, 32)। यह हमारी इच्छाओं के नियंत्रण में हैं, इसलिए हम तय कर सकते हैं कि जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तब हमें किस प्रकार आचरण करना चाहिए। हम शब्दों, स्वर, हमारे हावभाव और पवित्र आत्मा के वरदानों का प्रस्तुतीकरण आदि बातों पर नियंत्रण रखते हैं। हमें किसी अनोखे एहसासों या भावना का इन्तज़ार करने की ज़रूरत नहीं है, न ही हमें ऐसी भावनाओं या एहसासों का प्रदर्शन करने की ज़रूरत है। हम वास्तविक बने रहे।

कुछ पिन्तेकुस्तीय/कैरिस्मैटिक लोगों के मध्य यह आम बात है कि जब वे अन्य अन्य भाषाओं में बोलते हैं, तब लोग बावलों के समान करते हैं, अपने हाथ पांव फेंकते हैं, अनियंत्रित रूप से चीखते हैं, "अपना नियंत्रण खोने" या अपना आपा खोने का बहाना बनाते हैं। यह न केवल अनावश्यक और अव्यवस्थित है, बल्कि खतरनाक भी है। जब हम अपना नियंत्रण खो देते हैं, हम अनावश्यक रूप से खुद को दुष्टात्माओं के नियंत्रण और प्रभाव के लिए खोल देते हैं। यदि ऐसा होता रहा, तो यह आसानी से हमें दुष्टात्माओं के छल और दबाव में ले जाएगा। इसलिए, इस प्रकार की प्रथा को दृढ़तापूर्वक हतोत्साहित किया जाना चाहिए। हमें लोगों को यह समझने में मदद करना चाहिए

कि पवित्र आत्मा के अधीन कैसे हों। पवित्र आत्मा के अधीन होना हमारी इच्छा का कार्य है – जहां पर हम उसके साथ, उसके सहयोग से प्रवाहित होने का चुनाव करते हैं और वही करते हैं जो करने हेतु वह हमें प्रेरित करता है। अतः सामान्य तौर पर हम अपना नियंत्रण नहीं खोते (अर्थात यदि पौलुस के समान स्वर्ग से हम पर ज्योति प्रगट हुई और हम भूमि पर गिर न गए हों, जैसा कि प्रे. काम 9:3,4 में हम देखते हैं)। बल्कि, हम खुद पर के नियंत्रण को पवित्र आत्मा के प्रभाव में ला रहे हैं ताकि कुल मिलाकर हमारी इच्छा के सहयोग से वह हमें प्रेरित करता है।

प्रश्न 8. क्या जब सब इकट्ठा होते हैं, तब मैं कलीसिया में अन्य अन्य भाषाओं में बोल सकता हूं?

"इसलिए यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो, और सब के सब अन्यान्य भाषा बोलें, और अनपढ़े या अविश्वासी लोग भीतर आ जाएं, तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे? यदि अन्य भाषा में बातें करनी हों, तो दो दो, या बहुत हो तो तीन तीन जन बारी बारी बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे। परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करे" (1 कुरिन्थियों 14:23,27,28)।

हा! जहां तक परमेश्वर और हमारे बीच की बात है और हम अव्यवस्था और उपद्रव नहीं मचाते (वचन 28), तो हम समूह के रूप में अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने के लिए स्वतंत्र हैं। इसलिए यदि वहां कोई अविश्वासी है या ऐसा कोई व्यक्ति है जो पहले कभी कलीसिया की आराधना में नहीं आया, और जो कुछ हो रहा है नहीं समझता है, वह उलझन में नहीं पडेगा (वचन 23)। मान लीजिए कि आप एक छोटे समूह में हैं और समूह में हर कोई अन्य भाषाओं में बोलने के विषय में जानता है, तब आप अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते समय स्वतंत्र होकर अपनी आवाज़ उठा सकते हैं। परंतु, यदि आपको अन्य अन्य भाषाओं में संदेश देना है, तो उसका अर्थ बताया

जाना चाहिए (वचन 27)। 1 कुरिन्थियों 14:23 की प्रेरणा यह है कि जो लोग हमारे आस पास हैं उनके प्रति हम संवेदनशील हों और इस नियम के अनुसार नहीं कि हमें अन्य अन्य भाषाओं में बोलना चाहिए या नहीं बोलना चाहिए।

प्रश्न 9. यदि मैं अन्य अन्य भाषाओं में बहुत अधिक प्रार्थना करता हूं, तो क्या यह उचित है?

हां! कुरिन्थुस की कलीसिया ऐसी कलीसिया थी जो आत्मिक वरदानों के लिए अत्यंत उत्साही थी। आत्मिक वरदानों के विषय में सिखाते हुए पौलुस कहता है, *"इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो"* (1 कुरिन्थियों 14:12)। जब वे आराधना के लिए इकट्ठा होते थे, तब हर कोई किसी आत्मिक वरदान को व्यक्त करने के लिए उत्सुक होता था, इसलिए पौलुस ने आज्ञा दी: *"इसलिए हे भाइयो, क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है; सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए"* (1 कुरिन्थियों 14:26)। ऐसे लोगों के लिए जो सम्भवतः अन्य अन्य भाषाओं में बहुत बोलते थे और अन्य वरदानों में भी कार्य करते थे, प्रेरित पौलुस ने कहा, *"मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैं तुम सब से अधिक अन्यान्य भाषा में बोलता हूं"* (1 कुरिन्थियों 14:18)। इसलिए स्पष्ट रूप से पौलुस अन्य अन्य भाषाओं में बहुत बोलता था।

प्रश्न 10. क्या मैं अन्य अन्य भाषाओं में बोलता हूं या पवित्र आत्मा मेरे द्वारा बोलता है?

"और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रे. काम 2:4)।

"इसलिए यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती" (1 कुरिन्थियों 14:14)।

जब आप अन्य अन्य भाषाओं में बातें करते हैं, तब बोलने का काम आप करते हैं। यह आपकी इच्छा का कार्य है। यह आपका स्वर यंत्र है जिसका उपयोग किया जा रहा है और यह आपकी अपनी वाणी, आवाज़ और लय है। केवल यह कि पवित्र आत्मा आपको शब्द देता है – विषयवस्तु जो आप अपनी आत्मा के द्वारा बोलते हैं। अतः यह अपेक्षा न करें कि पवित्र आत्मा अचानक आपकी जीभ को नियंत्रण में लेगा, उसे पलटाएगा और आपके मुंह से शब्दों को बाहर निकालेगा। ऐसा नहीं होगा। आपको अपनी इच्छा के कार्य के रूप में बोलना होगा, जो पवित्र आत्मा आपको बोलने के लिए देता है।

2

अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने के अद्भुत लाभ

अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने के कुछ अद्भुत लाभ यहां प्रस्तुत किए गए हैं।

बिना सीमाओं के प्रार्थना करना

जब हम ऐसी भाषा में प्रार्थना करते हैं जो हमें ज्ञात है, तब हम केवल जो हम जानते हैं उसी के अनुसार प्रार्थना कर सकते हैं। जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तब हमारी आत्मा पवित्र आत्मा से योग्यता पाकर भेद की बातें प्रार्थना में बोलती है। अतः उस प्रार्थना का स्त्रोत पवित्र आत्मा है और बाइबल कहती है कि पवित्र आत्मा सारी बातें जानता है। इसलिए यह अद्भुत बात है कि हम उन लोगों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं जिन्हें हम नहीं जानते क्योंकि पवित्र आत्मा ऐसे व्यक्ति के लिए हमारे द्वारा प्रार्थना कर सकता है जिसे हम नहीं जानते। हम परमेश्वर के भेदों को प्रार्थना में बोलते हैं (1 कुरिन्थियों 14:2)। हमारा संपूर्ण प्रार्थना जीवन विस्तार पाता है और अब असीमित है। यदि यही – हमारा प्रार्थना जीवन असीमित होना – अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने का एक मात्र लाभ है, तो वह हमें अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के लिए प्रेरित करने के लिए पर्याप्त होना चाहिए। परंतु, उसके और भी लाभ हैं।

परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार प्रार्थना करना

“इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती

करता है। और मनों का जांचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है" (रोमियों 8:26,27)।

कई बार जब हम ज्ञात भाषा में प्रार्थना करते हैं, हम नहीं जानते कि जो प्रार्थना हम कर रहे हैं वह परमेश्वर की सिद्ध इच्छा है या नहीं। परंतु पवित्र आत्मा कभी परमेश्वर की इच्छा का विरोध नहीं करता। या उसके विपरीत नहीं बोलता। अतः जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तब हमें आश्वस्त रहना चाहिए कि अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने में बिताया गया प्रत्येक क्षण परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है।

देह की निर्बलताओं पर जय पाने में हमारी सहायता करता है

"इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए बिनती करता है" (रोमियों 8:26)।

"सहायता करता है" इस शब्द का अर्थ "आपकी दुर्बलता के विपरीत आपके साथ मिलकर थाम लेता है।" इस प्रकार पवित्र आत्मा हमारी दुर्बलताओं में हमारी सहायता करता है क्योंकि हम नहीं जानते कि किस प्रकार प्रार्थना करें। उदाहरण के तौर पर, यदि हममें निर्बलता है, और नहीं जानते कि उससे कैसे छुटकारा पाएं, तो हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकते हैं और जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना जारी रखेंगे, तब पवित्र आत्मा उस पर जय पाने में सहायता करेगा। यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने कहा कि यीशु पवित्र आत्मा और आग से हमें बपतिस्मा देगा (मत्ती 3:11)। व्यक्तिगत तौर पर आग में बपतिस्में का संबंध भूस को – देह के कामों को जलाने से है।

आत्मिक उन्नति करता है

"जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है" (1 कुरिन्थियों 14:4)।

"परंतु हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए" (यहूदा 1:20)।

जब हम अज्ञात भाषा में प्रार्थना करते हैं, तब हम वस्तुतः खुद की उन्नति करते हैं – हमारे अत्यंत पवित्र विश्वास में हमारी उन्नति करते हैं। हममें से कुछ आत्मिक रीति से उन्नति पाने की तीव्र लालसा रखते हैं! परंतु उस स्थान तक पहुंचने हेतु हम क्या करते हैं? हमारी आत्मा में उन्नति पाने का एक तरीका जो परमेश्वर ने हमें दिया है, वह है अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने के द्वारा। इस तरह, हम अपने भीतरी मनुष्यत्व में आत्मा के द्वारा सामर्थ पाते हैं, जैसा कि इफिसियों 3:16 में कहा गया है, *"कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ।"*

हमें परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखता है

"परंतु हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए, अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा देखते रहो" (यहूदा 1:20,21)।

जब हम अपने अत्यंत पवित्र विश्वास में खुद की उन्नति करते हैं – पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हैं – तब हम परमेश्वर के प्रेम में चलते रहने की योग्यता पाते हैं। यह एक प्रगट परिणाम है, जब शरीर के कामों से निपटारा पाया जाता है और उन्हें मार्ग से हटा दिया जाता है।

विश्राम और ताज़गी लाता है

"वह तो इन लोगों से परदेशी होंठों और विदेशी भाषावालों के द्वारा बातें करेगा; जिन से उसने कहा, विश्राम इसी से मिलेगा; इसी के द्वारा थके हुए को विश्राम दो; परन्तु उन्होंने सुनना न चाहा" (यशायाह 28:11,12)।

हमें यकीन है कि यह अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने का उल्लेख करता है क्योंकि पौलुस 1 कुरिन्थियों 14:21 में अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने के विषय में चर्चा करते हुए यशायाह से इसी अनुच्छेद का संदर्भ लेता है। जिस प्रकार हमारा भौतिक शरीर थक जाता है और हम कुछ समय विश्राम करते हैं, हमारे आत्मिक मनुष्य को भी ताज़गी और विश्राम पाने की आवश्यकता होती है, और हम अन्य अन्य भाषा में प्रार्थना करने के द्वारा ताज़गी पाते हैं।

परमेश्वर की स्तुति और बड़ाई करने का दूसरा तरीका

"परन्तु अपनी अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं" (प्रे. काम 2:11)।

"क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना" (प्रे. काम 10:46)।

"इसलिए क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा" (1 कुरिन्थियों 14:15)।

नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन क्यों कहेगा? इसलिए कि वह तो नहीं जानता कि तू क्या कहता है? तू तो भली भांति से धन्यवाद करता है, परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती" (1 कुरिन्थियों 14:16,17)।

हम ज्ञात भाषा में गीतों को गाकर और आत्मिक भजन गाकर परमेश्वर की स्तुति और आराधना कर सकते हैं। परंतु गीतों को और स्तुति के गीतों को गाने का, धन्यवाद देने का, भोजन पर आशीष मांगने का एक और तरीका है, वह है अन्य अन्य भाषाओं में ऐसा करना। ऐसा समय हो सकता है जब हम हमारे हृदय की भावनाओं को पूर्णरूप से परमेश्वर के सामने व्यक्त करना चाहते हैं, परंतु उन्हें ज्ञात भाषा में अभिव्यक्त करने में हम खुद को असमर्थ पाते हैं इसी समय हम अन्य अन्य भाषाओं में परमेश्वर की स्तुति और बढ़ाई कर सकते हैं। हम में से जो लोग अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, वे अनुभव से जानते हैं कि हृदय की गहरी बातें हमारे अपने शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकतीं। जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना और आराधना करने में समय बिताते हैं, तब हम जानते हैं कि हमने खुद को अभिव्यक्त किया है। पवित्र आत्मा जानता है कि ऐसा करने में हमारी किस प्रकार सहायता करें।

हमारी आत्माओं को हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के भेदों (छिपी हुई गुप्त बातों) को प्राप्त करने की सामर्थ देता है

"परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिए ठहराया, जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि जानते, तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। परन्तु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं। परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है। मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है। वैसी ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा। परन्तु हमने संसार का आत्मा नहीं, परन्तु

वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं, जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं। परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है। आत्मिक जन सब कुछ जांचता है, परन्तु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता। क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखलाए? परन्तु हममें मसीह का मन है" (1 कुरिन्थियों 2:7–16)।

"क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है" (1 कुरिन्थियों 14:2)।

कई बार जो कुछ हम कहते हैं उसका अर्थ हमारी आत्माओं में तब भेजा जाता है जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं। एक अत्यंत महत्वपूर्ण संसारिक निर्णय जो मैने लिया – एमी से विवाह करने का – वह तब लिया गया जब मैं अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर रहा था। एक दिन, जब मैं न्यू जेरेसी में अध्ययन कर रहा था, तब मैं कॉलेज से घर लौटा और अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने लगा। इस समय मैने अपनी आत्मा में महसूस किया कि मुझे एमी को पत्र लिखकर उसे यह पूछने की ज़रूरत है कि क्या मेरे साथ विवाह करने की संभावना पर विचार करने के लिए वह तैयार है। इससे पहले मैं एमी से पहले कभी नहीं मिला था। मैं नहीं जानता था कि वह कैसी दिखती है; वह नहीं जानती थी कि मैं कैसा दिखता हूं। इससे पहले हमने एक दूसरे को कुछ पत्र लिखे थे, क्योंकि वह उस समय मनीपाल, भारत में उस समय के अगुवों में से एक थी, जहां पर मैंने इंजिनीरिंग में अण्डर ग्रेज्युएट का अध्ययन किया था और वहां के विद्यार्थियों ने कार्य करना आरम्भ किया था। कई बातें थीं जिनके विषय में मुझे विचार करना था,

परंतु मेरी आत्मा में मुझे यह यकीन हो गया था कि यह उसकी ओर से है। और उसी दिन 22 नवंबर 1993 को जब मैं एमी को पत्र लिख रहा था यह पूछने के लिए कि क्या वह मुझसे विवाह करेगी, तब मनीपाल में उसके मित्र ने उससे यूं ही पूछा, "यदि आशीष तुम्हें विवाह करने के विषय में पूछता है, तो तुम क्या करोगे?" जब आप पवित्र आत्मा में प्रार्थना करेंगे, तब आपका आत्मा जीवन के ऐसे कई महत्वपूर्ण निर्णयों को लेने में आपकी सहायता करेगा।

परमेश्वर के उन वरदानों को चमकाने में मदद करता है, जो हममें हैं

"इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूं, कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है, चमका दे" (2 तीमुथियुस 1:6)।

हम सभी विश्वासियों के जीवनों में परमेश्वर के द्वारा कुछ वरदान रखे गए हैं। अक्सर हम उन्हें कुछ समय तक निष्क्रिय रूप में छोड़ देते हैं और हम जानते हैं कि हमें उन्हें फिर से चमकाने की ज़रूरत है। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि वह अपने वरदानों को चमकाए, उन्हें प्रज्जवलित करे। हमने अनुभव से यह पाया है कि अत्यंत मौलिक आत्मिक वरदान – अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना – का उपयोग करने के द्वारा, परमेश्वर ने आपके जीवनों में जो अन्य वरदान रखें हैं, उन्हें चमकाना आसान होता है। जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तब हम परमेश्वर के आत्मा के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। हम अपने भीतरी मनुष्यत्व को मज़बूत बनाते हैं। हम भय पर और अन्य आत्मिक वरदानों के उपयोग में बाधा उत्पन्न करने वाली बातों पर जय पाते हैं।

3

अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने की योग्यता के साथ पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने हेतु प्रार्थना

जैसा कि हमने इस पुस्तक में पहले कहा है, कि हर एक विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकता है। परमेश्वर ने हमसे प्रतिज्ञा की है कि वह सभी प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलेगा। जब आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं, और इच्छा रखते हैं कि आप उसके आत्मा से भर जाएं, तो वह अपना आत्मा आप पर उण्डेलेगा।

बाइबल कहती है, *"बरसात के अन्त में यहोवा से वर्षा मांगो, यहोवा से जो बिजली चमकाता है, और वह उनको वर्षा देगा और हर एक के खेत में हरियाली उपजाएगा"* (जकर्याह 10:1)। वह मैदान की हर घास को वर्षा देगा। यदि आप उससे मांगेंगे, तो वह आप पर अपना आत्मा उण्डेलेगा।

"आओ, हम ज्ञान ढूंढ़ें, वरन् यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए यत्न भी करें; क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चित है; वह वर्षा की नाईं हमारे ऊपर आएगा, वरन् बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिससे भूमि सिंचती है" (होशे 6:3)।

हमारे जीवनों में ताज़गी और बेदारी लाने के लिए परमेश्वर हमारे पास वर्षा की नाईं आएगा। हमें केवल उससे बिनती करना है,"तुममें से ऐसा कौन पिता होगा कि जब उसका पुत्र उसे रोटी मांगे, तो उसे पत्थर दे; या मछली मांगे, तो मछली के बदले उसे सांप दे? या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छू दे? इसलिए जब तुम बुरे होकर अपने लड़केबालों

को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा?" (लूका 11:11–13)।

बाइबल कहती है कि यीशु हमें पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देगा (मत्ती 3:11)। अतः, पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने हेतु व्यक्ति को पासबान की या परमेश्वर के जन की ज़रूरत नहीं होती! हम केवल यीशु से बिनती कर सकते हैं कि वह हमें बपतिस्मा दे – अपना पवित्र आत्मा हम पर उण्डेले। जब वह अपना आत्मा उण्डेलेगा, तब स्वर्गीय भाषा प्रगट होगी। प्रेरितों के कामों की पुस्तक में यही हुआ – जितनी बार लोगों ने पवित्र आत्मा के वरदान को ग्रहण किया, कुछ अलौकिक घटित हुआ। वे अन्य अन्य भाषाओं में परमेश्वर की आराधना करने लगे।

"मसीह ने जो हमारे लिए श्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है। यह इसलिए हुआ, कि इब्राहीम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें, जिसकी प्रतिज्ञा हुई है" (गलातियों 3:13,14)।

हम आत्मा की प्रतिज्ञा विश्वास द्वारा ग्रहण करते हैं।

परमेश्वर आपके जीवन में अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए तैयार है। केवल उससे बिनती करें और विश्वास से ग्रहण करें!

बिनती करने और ग्रहण करने में आपकी सहायता करने हेतु यहां पर एक सरल प्रार्थना दी गई है।

प्रार्थना

प्रिय प्रभु यीशु, मैं एक विश्वासी हूं। मैं आपसे बिनती करता हूं कि मुझे पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दीजिए, ताकि आपका गवाह बनने हेतु मुझे सामर्थ प्राप्त हो। स्वर्गीय पिता, मैं यीशु के नाम से मांगता हूं, कृपया

अपना आत्मा मुझ पर उण्डेलिए, जैसे कि आपने प्रतिज्ञा की है कि आप अंत के दिनों में करेंगे। मैं अब विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा के सारे वरदानों के साथ पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने को ग्रहण करता हूं। पवित्र आत्मा अब मुझ पर है और उसके सारे वरदान उसके साथ मुझमें वास करते हैं। धन्यवाद प्रभु यीशु। क्योंकि मैं विश्वासी हूं, इसलिए मैं अब पवित्र आत्मा द्वारा दी गई योग्यता से नई भाषा में बोलता हूं। मैं अपेक्षा करता हूं मेरे जीवन के द्वारा आत्मा के सारे वरदान प्रवाहित हों। धन्यवाद प्रभु यीशु। पवित्र आत्मा आपका स्वागत है!

यह प्रार्थना करने के बाद, आप जहां कहीं हैं अपने मुंह को खोलें, और जो कुछ आपके मुंह से निकलता है उसे बोलें। यह आपकी आवाज़ होगी, आपके स्वरयंत्र काम करेंगे। भाषा पवित्र आत्मा की ओर से आएगी। आरम्भ में आपको लगेगा कि आप कुछ अजीब आवाज़ निकाल रहे हैं। परंतु आगे बढ़िए और उसे बोलिए। जब आप विश्वास में कदम बढ़ाएंगे, शब्द बहने लगेंगे। याद रखें, आप एक समय में दो भाषाएं नहीं बोल सकते। इसलिए अपनी ज्ञात भाषा में कुछ भी बोलने का प्रयास न करें। “प्रभु की स्तुति हो” या “हालेलुय्याह” बड़ी तेजी से दोहराने का प्रयास न करें। ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। इससे भाषा के प्रवाह में रुकावट आएगी जो पवित्र आत्मा मुक्त करना चाहता है। इसके बजाए, प्रार्थना करने के बाद, केवल विश्वास का कदम बढ़ाएं और नई भाषाएं बोलने लगे। यीशु ने कहा कि आप ऐसा करेंगे, इसलिए आआप ऐसा करेंगे!

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट “ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर” के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्धनों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अद्भुत लाभ

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org